16

दूसरों को साथ लेकर चलना

(मत्ती 7:3–12)

''दोष न लगाओ'' पाठ के साथ हम ने मत्ती 7:1–12 से आरम्भ किया था जो ऐसा हवाला है कि वह हमें सिखाता है (अन्य नियमों के साथ कि दूसरों को साथ लेकर कैसे चलें)। मैंने सम्बन्धों पर अपने वचन पाठ से छह सुझाव निकालने का वचन दिया था। पहला सुझाव यह था कि हमें दोष लगाने वाले होना बन्द करना आवश्यक है। उस नियम के सम्बन्ध में मैंने सुझाया था कि यीशु कम से कम पांच सम्मानय व्यवहारों को निरुत्साहित कर रहा था:

- अपनी पृष्ठभूमि, पूर्वधारणाओं, प्राथमिकताओं को अपने न्याय को प्रभावित करने देना।
- बिना सभी तथ्यों की पड़ताल या सब परिस्थितियों को जाने जल्दबाजी में न्याय करना।
- किसी दूसरे की मंशा का न्याय करना।
- लोगों के काम पर बेहतरीन सम्भव संरचना (व्याख्या के बजाय सबसे बेकार को रखना)।
- करुणा और प्रेम से अपने न्याय को मोड़ने के बजाय न्याय करने में कठोर, कड़वे और कपटी होना।

यह सार्वभौमिक दोष हैं। आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते होंगे जो इन में से एक बात का दोषी हो या नहीं जानते ?

यह प्रश्न पूछने के बाद मैं क्षमा चाहता हूं। यह एक चालाकी भरा प्रश्न था। यदि कोई आपके दिमाग में आता है तो आपने उस व्यक्ति का न्याय कर दिया हो सकता है कम से कम आप 7:1, 2 को अपने ऊपर लागू करने के बजाय किसी और पर लागू करने के लिए दोषी हो सकते हैं। मैंने दूसरों को साथ लेकर चलने और दूसरे सिद्धांत का परिचय देने के लिए जानबूझकर यह किया।

आवश्यक बदलाव लाएं (7:3-5)

यदि हम दूसरों को साथ लेकर चलने के इच्छुक हूं तो हमारी पहली चिन्ता अपने जीवनों में आवश्यक बदलाव लाने की होनी चाहिए। जब बदलाव की आवश्यकता की बात आती है तो हम आमतौर पर अपने बजाय दूसरों की ओर ताकते हैं। यीशु इस बात को समझता था। उसने कहा:

> तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है,[1] और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता[2] ? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। हे कपटी! पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल

सकेगा (आयतें 3–5)।

इस वचन में थोड़ी हंसी की बात है। अपनी आंख से लट्ठा निकालते हुए किसी आदमी की कल्पना करें जो अपने आपको वहां रखने की कोशिश कर रहा है, जहां से वह किसी दूसरे व्यक्ति की आंख का तिनका देख सके। (क्या आप उस लट्ठे के कभी इधर कभी उधर डोलने की कल्पना कर सकते हैं, जबकि पास खड़े लोग सिर में चोट लगने से अपने आपको बचाने की कोशिश करते हैं?) यीशु हमें बताना चाहता था कि जब हमारी स्थिति उन से जिनका हम न्याय कर रहे हैं बुरी हो तो न्याय करने का हमारा काम मज़ाक ही है।[3]

मसीह के मन में हो सकता है कि शास्त्रियों और फरीसियों के कपट की बात हो, पर इस वचन की सच्चाई हम सब को निरुत्तर कर देती है। अपनी कमियों की ओर ध्यान न देते हुए दूसरों की कमियों को देखना कितना आसान है! 2 शमुएल में राजा दाऊद की कहानी पर विचार करें। उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया और फिर बतशेबा के पति को मरवा डाला (11:1–17)। जब नातान ने दाऊद के पास जाकर उसे धनवान की कहानी बताई जिसने निर्धन आदमी का मेमना लेकर उसे मार डाला, तो दाऊद ने उस अपराध करने वाले को "फांसी" पर लटका देना चाहा[4] (12:1–6)। परन्तु जब नातान ने कहा, "तू ही वह मनुष्य है!" (12:7क), तो फांसी पर लटकाने के बजाय दाऊद प्रार्थना सभा के लिए तैयार हो गया (12:13; भजन संहिता 51; 32)। दूसरों को साथ लेकर चलने के सम्बन्ध में यीशु ने चाहा कि हम यह देखने के लिए *हम* में क्या परिवर्तन आवश्यक है पहले *अपने आप* को जांच लें।

संयोगवश मत्ती 7:3 के पहले भाग में हम मसीह द्वारा दोष लगाने की निन्दा किए जाने की सूची को पढ़ सकते हैं। यूनानी शब्द (*blepo*) के अनुवाद "देखता है" का "देखो" के लिए सामान्य शब्द से "बड़ी विशालता है और यह अधिक लीन, ध्यान से विचार करना" को व्यक्त करता है।[5] इसका अर्थ जांच पड़ताल करना, नज़दीकी से समीक्षा करना है। तिनके को देखना आसान नहीं होता। जब कोई आप से कहे, "मेरी आंख में तिनका है" तो आप सम्भवतया इसे तब तक नहीं देख सकते जब तक रोशनी सही न हो और आप उसे बहुत नज़दीक से नहीं देखते। इसलिए हम गलत न्याय करने की आदत की सूची में बहुत अधिक पाया जाने वाला गुण जोड़ सकते हैं: *लोगों में बेहतर के बजाय बुरे को देखना, हर शब्द को और हर काम को आलोचना करने के लिए कुछ न कुछ कमी ढूंढ़ने का प्रयास करना।* शास्त्री और फरीसी यीशु के साथ यही तो कर रहे थे।

कई टीकाकारों और कुछ अनुवादकों का मानना है कि मसीह ने "तिनका" और "लट्ठा" के अलंकारों का इस्तेमाल इसलिए किया, क्योंकि दोनों एक ही चीज़ से बने होते हैं। एक तो बहुत छोटा था जबकि दूसरा बहुत ही बड़ा। पर दोनों लकड़ी के ही बने हो सकते हैं। NIV में "बुरादे का तिनका" और "तख्ता" है।

यह सम्भावना कि तिनका और लट्ठा दोनों एक ही चीज़ से बने होते हैं कुछ दिलचस्प विचार पैदा करता है। यह मानवीय स्वभाव की सच्चाई है कि आमतौर पर हम दूसरों की कमियों के प्रति इतना संवेदनशील होते हैं जितना अपने जीवन की कमियों से नहीं। मनोवैज्ञानिक इसे "क्षेपण" (बाहर निकला हुआ भाग) का नाम देते हैं यानी जो हम अपने जीवनों में देखते हैं उसे दूसरो

के जीवनों को बताना। हम मान लेते हैं कि हर कोई हमारे जैसा ही है, दूसरे लोग वैसे ही सोचते और महसूस करते हैं जैसे हम। यह भी तथ्य है कि हमारे अपने पाप हमें उतने बुरे नहीं लगते जितने दूसरों के वही पाप लगते हैं। बर्टलैंड रस्सल के प्रसिद्ध ''भावनात्मक संयोग'' समझाते हैं कि हम परिस्थिति की कल्पना कैसे करते हैं: ''मैं अडिग हूं, तुम ज़िद्दी, और वह हठी है। मैंने फिर से विचार किया है; तुम ने अपना मन बदल लिया है; वह अपनी बात से मुक्कर गया है।''[6]

इसके बाइबली उदाहरण के लिए यहूदा और उसकी बहू तामार की कहानी पढ़ें (उत्पत्ति 38)। जब यहूदा को बताया गया कि तामार ने ''व्यभिचार किया है'' और ''गर्भवत्ती भी हो गई है'' तो उसे वह मार डालने पर उतारू था (आयत 24); पर जब तामार ने साबित कर दिया कि यहूदा ही उसके बच्चे का पिता है (आयत 25), तो तुरन्त मृत्यु के दण्ड का दोषी वह बन गया (देखें आयत 26)।

यदि मसीह ने इन दोनों चीज़ों से अपनी बात जानबूझकर समझाई, जो कि दोनों लकड़ी से बनी हैं, तो हमारे पास लट्ठे के आकार वाले पाप वाले आदमी के तिनके के आकार वाले पाप वाले आदमी से अपने आपको सही दिखाने की हास्यास्पद स्थिति मिलती है। पौलुस ने रोमियों 2:1-3 में ऐसे बेमेल की बात लिखी है:

> सो हे दोष लगाने वाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरुत्तर है! क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है। और हम जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक-ठीक दण्ड की आज्ञा होती है। और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?

यीशु ने ऐसे काम करने वालों की क्या खूबी बताई? यीशु ने कोई शब्द काटा नहीं; आयत 5 के पहले भाग में उसने कहा, ''हे *कपटी*''! *उग्र समालोचक* होना हमें *कपटी* बना देता है। यदि हम दूसरों की आलोचना करते रहें तो हम यह संकेत दे रहे होते हैं कि हमारा रिकॉर्ड साफ़ है, यानी हमारे जीवन सही हैं। नहीं तो हम न्याय करने के योग्य न होते। इसके साथ ही हमारी आंखों की पुतलियों में से लटक रहे टेलीफ़ोन के बड़े बड़े खम्भे[7] हैं।

दोष लगाने या न्याय करने के सम्बन्ध में मैं फिर कहता हूं कि हमें आरम्भ अपने आप से ही करना चाहिए। यीशु ने कहा, ''*पहले* तू अपनी आंख में का लट्ठा निकाल ले।'' दूसरों के पापों का अंगीकार करना आसान होता है; कठिन तो अपने पापों का अंगीकार करना है। पौलुस ने विभिन्न संदर्भों में अपनी जांच करने वकालत की: ''अपने आप को परखो ...'' (2 कुरिन्थियों 13:5); ''अपने आप को जांचो''; ''इसलिए मनुष्य अपने आपको जांच ले'' (1 कुरिन्थियों 11:28, 31)। रोमियों 14:13 विशेष रूप से प्रासंगिक है। फिलिप्स के अनुवाद में इसे इस आयत को इस प्रकार लिखा गया है, ''इसलिए एक दूसरे पर आलोचनात्मक दृष्टि डालना बन्द करें। यदि हमें आलोचनात्मक होना ही है, *तो हम अपने ही आचरण की आलोचना करें* और देखें कि हम ने किसी भाई को ठोकर खिलाने या गिराने के लिए कुछ नहीं किया।''

अपनी जांच करने के मामले में भी, सहजबुद्धि की आवश्यकता है। हम व्यक्तिगत

असफलताओं और कमियों वाली विकृत ग्रस्तता की बात नहीं कर रहे जिसे वारेन डब्ल्यू.वियर्स्बे ने "निरन्तर शव परीक्षा" नाम दिया है।[8] तौभी यदि हम दूसरों को साथ लेकर चलना चाहते हैं तो हमारी पहली चिन्ता अपने *स्वयं* के जीवनों में परिवर्तन लाने की होनी चाहिए। यदि हम अपने से आरम्भ करते हैं तो हम कम से कम दोष लगाने वाले बनें। हमें अपने जीवनों में से पाप के उन सब लट्ठों को निकाल देना आवश्यक था, पर यहां दोष लगाने वाले होने के पाप का लट्ठा है जिसे निकाला जाना आवश्यक है।

हम आयतें 3 से 5 को छोड़ सकते हैं क्योंकि हम ने इन आयतों के आरम्भिक ज़ोर देने में इस पर बात कर ली है। परन्तु इस भाग के अन्त में वह सच्चाई है जिसे मैं नज़रअदाज़ नहीं करना चाहता।

दीनता और संवेदनशीलता में दूसरों की सहायता करें (7:5ख)

यदि हम सचमुच में किसी से प्रेम करते हैं और उसके जीवन में पाप को देखते हैं तो हम उसे उस पाप को निकालने में सहायता करने की कोशिश करें।[9] आयत 5 के पिछले भाग में यह स्पष्ट है कि यीशु द्वारा हर किसी को पहले अपनी आंख से लट्ठा निकालने का आदेश दिए जाने के बाद, उसने कहा, "*तब* तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।" यीशु ने कहा कि हमारी प्राथमिकता अपने स्वयं के पापों पर काम करने की है, पर उसने हमारे जीवन में सुधार पाने का किसी भाई को उसके पापों से निपटने में सहायता करने के लिए मना नहीं किया।[10] एक दूसरे के अपने मनों और जीवनों से पाप को निकालने में सहायता करने की आवश्यकता पर कई आयतें हैं:

> हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो (गलातियों 6:1, 2)।

> हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस को फेर लाए। तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा (याकूब 5:19, 20)।

मत्ती 7:3–5 में आंख में तिनके वाला यीशु का उदाहरण सहायता *की आवश्यकता* को रेखांकित करता है। पुतलियां और पलकें दोनों ही अति संवेदनशील होती हैं। आंख में तिनका भी हंसने वाली बात नहीं है। यदि आपके बच्चे हैं, तो आपने उनमें से किसी के चिल्लाने पर उनकी आवाज़ में तड़प सुनी होगी, "मेरी आंख में कुछ पड़ गया है!"

यह उदाहरण *उस ढंग* का भी संकेत देती है जो सहायता करने वाले द्वारा अपनाया जाना चाहिए। यदि मेरी आंख में कुछ पड़ गया है और आप उसे निकालने में मेरी सहायता के लिए आए हैं, तो मैं चाहूंगा कि आप मेरे साथ बहु सावधानी और सहानुभूतिपूर्वक रहें। इसी प्रकार से हमें दूसरों के साथ व्यवहार करने में संवेदनशील होना आवश्यक है। पौलुस ने कहा, "... *नम्रता के साथ* ऐसे को संभालो" (गलातियों 6:1)।

हम सभी पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में जिसके सामने हम सभी को एक दिन खड़े होना है, पापी हैं। हम सभी को आत्मिक रूप में सहायता की आवश्यकता है, सो हमें चाहिए कि हम दूसरों की सहायता करें! परन्तु ऐसा करते हुए हमें इस बात का ध्यान रखना है कि यह सहायता सम्भाल और करुणा से हो।

इस बात को समझें कि हर कोई अलग है, और कठिन व्यक्ति के साथ व्यवहार करना सीखें (7:6)

आगे हम ''कुत्तों'' और ''सूअरों'' वाली आयत पर आते हैं (आयत 6)। इसमें एक पहेली है; यह आयत उस सोच के विरुद्ध लगती है जिसकी बात यीशु कर रहा था। क्या हमें बाहर जाकर दूसरों को ''कुत्ते'' और ''सूअर'' कहना चाहिए? मुझे लगता है कि मसीह ने इस वाक्य को सन्तुलन के लिए रखा है। हमें उग्र समालोचक, दोष ढूंढ़ने वाले, अपने आप बनें ''गाठों के निरीक्षक'' नहीं बनना है बल्कि हम भोले-भाले भी न बनें। परमेश्वर ने हमें सहजबुद्धि दी है और दूसरों के साथ व्यवहार करने में हम से इसका इस्तेमाल करने की उम्मीद करता है। हमें बेदर्द और दोष दर्शक नहीं बनना, पर हमें बेपरवाह और भोले भी नहीं बनना है।

यदि यीशु हमें केवल 1 से 5 आयतें ही देता, तो वह हमें नाजुक स्थिति में छोड़ सकता था, जिसे कोई भी निर्णय लेने से डर लगता क्योंकि हम गलत निर्णय ले सकते थे जो हमारे पीछे पड़ जाता। परन्तु आयत 6 में उसने संकेत दिया कि हमें दूसरों के सम्बन्ध में *कुछ* निर्णय लेने *आवश्यक* हैं। और उसने कुत्तों और सूअरों का हवाला देकर इस तथ्य को समझाया। ''पवित्र वस्तुएं[11] कुत्तों को न दो और अपने मोती सूअरों को आगे मत डालो, ऐसा न हो कि वह उन्हें अपने पांवों तले रौंद दें और पलटकर तुमको फाड़ डालें।''

मसीह के शब्दों पर विचार करने से पहले हमें कुत्तों और सूअरों के स्वभाव को विशेषकर उसके समय में समझना आवश्यक है। मूसा की व्यवस्था में दोनों ही औपचारिक रूप में अशुद्ध जानवर थे।[12] जब आप कुत्तों पर विचार करते हैं तो किसी के पालतु कुत्तों के बारे में मत सोचे बल्कि झुण्डों में भागने वाले गन्दे, जंगली, भूखे और मुर्दाखोर कुत्तों पर ध्यान दें। ''कुत्ता'' शब्द का इस्तेमाल कई बार बाइबल में पापी व्यक्ति के लिए रूपक के रूप में हुआ है (मत्ती 15:26; फिलिप्पियों 3:2; प्रकाशितवाक्य 22:15)। सूअर यहूदी लोगों के दिमाग में अशुद्धता का प्रतीक है। जिस कारण फलस्तीन में अधिकत (यदि सभी नहीं) सूअर आवारा ही होते थे।

इस बाइ वाली बात में कई टीकाकार चूक जाते हैं। आयत 6 को समझने की कोशिश करते हुए वह कहते हैं कि ''पलटकर उनको फाड़ डालें'' का अर्थ अवश्य सूअरों के लिए नहीं बल्कि कुत्तों के लिए होगा। हो सकता है,[13] पर यह ज़ोर देने के लिए कि सूअर ''तुम को फाड़'' नहीं सकते, सूअरों के विषय में उनकी अज्ञानता को दिखाता है। वे बच्चे दी हुई सूअरनी के पास नहीं गए होंगे जो यह लगने पर कि आप उसके बच्चों के बहुत करीब आ रहे हैं आपको फाड़ डालने की कोशिश करेगी। वे जंगली सूअरों की भयानकता से भी अपरिचित होंगे जो अदले का बदला देते हुए सब प्राणियों में से खतरनाक है।[14]

कुत्तों और सूअरों के स्वभाव को ध्यान में रखते हुए, आयत 6 को ध्यान से देखें। यीशु एक

बार फिर उन दृश्यों को दिखाता है जो बेतुकेपन को दिखाते हैं। पहले उसने ''पवित्र वस्तुएं कुत्तों को'' देने की बात की। किसी आवारा कुत्ते द्वारा उसके लिए जो पवित्र है धन्यवाद दिए जाने का कोई तरीका नहीं है। कुछ लोगों का विचार है कि यह आयत याजक के बलिदान की वेदी से मांस को लेकर जंगली कुत्तों के झुण्ड को डालने की अविश्वसनीय परिस्थिति की बात करती है। ऐसा कभी नहीं होता।

फिर यीशु ने ''मोती सूअरों के आगे'' डाले जाने की बात की। जिस प्रकार कुत्तों के लिए पवित्र वस्तु का कोई महत्व नहीं है वैसे ही सूअर कभ मोतियों की कदर नहीं करेंगे। यह पता चलते ही कि मोती भोजन नहीं है (हो सकता है कि उन्होंने मोतियों को खाने के लिए दांतों से तोड़ने की कोशिश की है), वे सचमुच मे ''आपको फाड़ डालने'' पर उतारू हो जाएंगे। मेरा ध्यान बहुत पुरानी बात पर जाता है जब मैं सूअरों को चारा डालने के लिए भोर से पहले उठ गया था। सूअरों को मुझे उनका चारा एक पुरानी बाल्टी में मिलाने की आवाज़ से ही वे पागल हो जाते हैं। मेरे उनके बाड़े तक पहुंचने तक वे एक दूसरे के ऊपर चीखते हुए चढ़ जाते। मुझे चारे वाली हौदी में चारा डालने में कठिनाई होती, जो स्पष्टतया कम से कम तीन चार सूअरों से भर गई होती थी। मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि यदि मैं अनाज और दूध के मिश्रण की जगह हाउदी में मोती डाल देता तो सूअरों को यह पता चलते ही कि वे चारा नहीं हैं, मुझे बहुत मज़बूत बाड़ केलिए प्रार्थना करनी पड़ती!

फिर हमें यह पूछना आवश्यक है कि ''तो यीशु ने 'कुत्ते' और 'सूअर' किसे कहा?'' इस प्रश्न का बेहतरीन उत्तर यह पूछकर दिया जा सकता है कि '' 'पवित्र क्या है' और 'मोती' क्या हैं?'' यीशु ने राज्य (कलीसिया) को ''बहुमूल्य *मोती*'' कहा (मत्ती 13:45, 46)। राज्य/कलीसिया के संदेश को शुभ समाचार (सुसमाचार) कहा जाता है (देखें मत्ती 4:23; 9:35; 24:14)। परमेश्वर का वचन *पवित्र* है (रोमियों 1:2; 2 पतरस 2:21) और इस पवित्र संदेश को ''धन'' कहा गया है (2 कुरिन्थियों 4:7)।

यह सब सच है इस कारण अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि मसीह परमेश्वर के वचन को ऐसे लोगों को देने के विरुद्ध चेतावनी दे रहा था जिनमें आत्मिक आभार की कमी है:

- वे जो लगातार सच्चाई को नकारते हैं,
- वे जिनके लिए सुसमाचार ''मूर्खता'' है (1 कुरिन्थियों 1:18, 23; 2:14),
- तीतुस 1:15 में बताए गए लोग ''अशुद्ध और अविश्वासी'' जिनके ''बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध'' हैं।

फिर से यीशु के मन में शास्त्री और फरीसी ही होंगे जो उसकी बात को मानने से इनकार करते हैं।

कुछ टीकाकार आयत 6 की इस व्याख्या पर आपत्ति करते हैं,[15] पर मेरा मानना है कि इस वचन की सरलतम व्याख्या है और यह पवित्र शास्त्र के अन्य वचनों के साथ सहमत हैं। ''सीमित आज्ञा'' देते हुए यीशु ने ठुकराए जाने पर अपने चेलों को अपने पांवों की धूल झाड़कर[16] आगे बढ़ जाने को कहा था (मत्ती 10:13, 14)।[17] यहूदियों ने जब-जब भी पौलुस के संदेश को ठुकराया तब उसने अन्यजातियों की ओर मुंह कर लिया (प्रेरितों 13:44-51; 18:5, 6; 19:9;

28:17-28)।

यह निर्णय लेना कठिन है। हमें अभी यह निर्णय लेने का अधिकार नहीं है कि कौन "कुत्ता" या "सूअर" है प्रेम सर्वदा अच्छी बातों पर विश्वास करता है और हमें हर किसी को सुसमाचार को सुनने का अवसर देना चाहिए (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। दूसरी ओर यदि हम किसी को लगातार सिखाने की कोशिश करते हैं और हमें लगातार ठुकराया जाता है तो एक हमें "सहजबुद्धि और अपने समय के अच्छे भण्डारी होने का नियम" (इफिसियों 5:16) यही कहेगा कि "अपने मोती सूअरों के आगे डालना बन्द करो और सिखाने के लिए किसी ओर को ढूंढ़ लो।"

परन्तु यहां पर जो मुख्य बात मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि 7:1-12 में यीशु के उदाहरणों में उसने स्पष्ट कर दिया कि हमें कई तरह के लोगों से इसे जोड़ना है और हमें सीखना आवश्यक है कि हर प्रकार के लोगों से कैसे व्यवहार करना है। हमें दुखी लोग मिलेंगे, जिनकी आंखों में तिनके हैं, ऐसे लोग जो हमारे प्रेम और ध्यान के हक्कदार हैं। हमें सूअर और कुत्ते भी मिलेंगे जो कभी सहायता किए जाने के योग्य नहीं होंगे। वे आपके उनके निकट आने के हर प्रयास का विरोध करेंगे। आप में उनकी एकमात्र दिलचस्पी यह तय करना है कि आपको कैसे फाड़ खाएं। ऐसे लोगों के साथ की जाने वाली सबसे बढ़िया बात वही है कि उन्हें अकेला छोड़ दो।

यीशु की उस स्त्री के साथ कोमलता पर विचार करें जिसने अपने आंसुओं से उसके पांव धोए थे (लूका 7:36-50) और उस स्त्री के साथ जो व्यभिचार करती पकड़ी गई थी (यूहन्ना 8:2-11)। ये मत्ती 23 अध्याय में कठोर मन शास्त्रियों और फरीसियों को उसकी सीधी डांट से अलग करते हैं। बार बार उसने कहा, "हे *कपटी* शास्त्री और फरीसियो, तुम पर हाए" (आयतें 13, 14, 15, 23, 25, 27, 29)।

यीशु ने कुत्तों और सूअरों को गोली मार देने के लिए नहीं कहा। उन्हें केवल अकेले छोड़ देने को कहा। पौलुस की डांट यहां उपयुक्त लगती है कि "जहां तक हो सके, *तुम भरसक* सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो" (रोमियों 12:18)।

परमेश्वर पर निर्भर रहने की ठान लें (7:7-11)

यह हमें प्रार्थना की सामर्थ पर महान आयतों यानी 7 से 11 तक ले आता है। इन आयतों को पहली बार पढ़ने पर हमें लग सकता है कि यीशु ने सम्बन्धों के विषय को समाप्त कर दिया था। परन्तु इस वचन के बाद वाली आयत (आयत 12) "इस कारण" के साथ अवस्था परिवर्तन कर देती है और फिर दूसरों को साथ लेकर चलने के ढंग का अन्तिम निर्देश यानी सुनहरी नियम देती है। "इस कारण" शब्द यह संकेत देता है कि यीशु अपने विषय को समेट रहा था अर्थात इसे संक्षिप्त कर रहा था, या समाप्ति की ओर ले जा रहा था। इसका अर्थ यह हुआ कि 7 से 11 आयतें दूसरों के साथ चलने के पूरे विषय से जुड़ी हैं। इन आयतों पर विस्तार से बात मैं अगले पाठ "आप परमेश्वर में भरोसा रख सकते हैं" में करूंगा। अभी के लिए मेरा उद्देश्य यह दिखाना है कि यह वचन किस प्रकार विचाराधीन विषय के संदर्भ से मेल खाता है।

एक और तो हमें दोष लगाने वाले नहीं बनना है यानी हमें दयालु और करुणामय बनना

आवश्यक है। दूसरी ओर हमें भोले नहीं बनना है यानी हमें पता होना आवश्यक है कि अपने पांव की धूल कब झाड़नी है। यह निर्णय लेना कठिन हैं। जब हमें कोमल होना चाहिए तब हमें कठोर होने या जब कठोर होना चाहिए तब कोमल होने से अपने आपको कैसे दूर रख सकते हैं? 7 से 11 आयतें हमें इसका उत्तर देती हैं और वह उत्तर यह है कि हम परमेश्वर पर निर्भर रहें।

> मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूंढता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन मुनष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? व मछली मांगे, तो उसे सांप दे? सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

ये वाक्य कितने महान हैं। परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है! जब प्रेमी मिता अपने बच्चों की आवश्यकताओं और विनतियों का उत्तर देता है, वैसे ही परमेश्वर हमें उत्तर देता है।

यह वचन कई प्रकार से हमारे विषय से जुड़ा है उदाहरण के लिए परमेश्वर हम पर दया दिखाता है, और इसका अर्थ यह है कि हमें दूसरों पर दया दिखानी चाहिए। विशेष रूप से यह इस बात पर ज़ोर देता है कि हम अपनी ज़रूरतें लेकर परमेश्वर के पास जा सकते हैं-विशेषकर यह जानने की जरूरत की दूसरों के साथ कैसे पेश आएं इस सम्बन्ध में संदेश याकूब 1:5क वाला ही है: ''पर यदि तुममें से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे।''

आयत 11 कहती है कि परमेश्वर ''अपने मांगने वालों को *अच्छी* वस्तुएं'' देगा! मैं किसी को यह कहते सुनता हूं, ''नया घर ... या और कपड़े ... या अच्छे वेतन वाली नौकरी बढ़िया रहेगी''-पर वास्तव में ''बढ़िया'' क्या है? क्या आत्मिक दान सबसे बढ़िया हैं? उन में से एक तो परखने वाली आत्मा यानी यह जानने की योग्यता है कि अलग-अलग लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें। यदि आप सचमुच लोगों को साथ लेकर चलना चाहते हैं। यदि आपके लिए सम्बन्धों का महत्व है तो आप प्रार्थना में अधिक समय बिताएंगे।

सुनहरी नियम के द्वारा जीवन बिताएं (7:12)

अन्त में हम आयत 12 पर आते हैं। इस आयत को पहाड़ी उपदेश का सुनहरा पल कहा गया है। निश्चित रूप से यह दूसरों को साथ लेकर चलने के ढंग पर चर्चा का शिखर है। इस आयत का आरम्भ ''इस कारण'' शब्द के साथ होता है। एक अर्थ में ये उपदेश में मानवीय सम्बन्धों पर कही गई हर बात को, चाहे वह भाई के साथ हो या शत्रु के साथ, सज्जन के साथ या दुशमन के साथ, संक्षिप्त कर देता है। विशेषकर यह उस सब को जो दूसरों को साथ लेकर चलने पर हम ने 7:1-11 में सीखा है संक्षिप्त करता है: ''इस कारण, जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो। क्योंकि व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षा यही है।'' आमतौर पर हम इसे इस प्रकार व्यक्त करते हैं: ''जैसा तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ किया जाए वैसा ही दूसरों के साथ करो।'' यह सम्भवतया यीशु की संसार भर में सबसे प्रसिद्ध बात है। लगभग हर कोई इन शब्दों को सराहता है। जो इस नियम के अनुसार नहीं चलते वे भी

इसे सराहते हैं।

यीशु से पहले, कइयों ने आयत 12क के नियम को नकारात्मक अर्थ में पिरोया था: "दूसरों के साथ वह *न* करो जो तुम *नहीं* चाहते कि तुम्हारे साथ किया जाए।" इस विचार को व्यक्त करने वालों में सुकरात, अरस्तु, प्रसिद्ध यहूदी गुरु अलेल, कन्फ्युशियस और बुद्ध। परन्तु इसे सकारात्मक रूप से कहने वाला यीशु पहला व्यक्ति था: "*वैसा* ही करो।" नकारात्मक और सकारात्मक ढंगों का एक संसार है: नकारात्मक बात आमतौर पर आत्मरक्षा के लिए होती थी जबकि सकारात्मक आत्मत्याग की बात होती। कुछ न करके नकारात्मक को पूरा करना सम्भव है।[18] जबकि सकारात्मक को करने के लिए भलाई करना आवश्यक है। नकारात्मक फिलास़फ़ी को ग्रहरण करने के लिए धार्मिक होना आवश्यक नहीं है; चाहे यह जीवन को देखने का प्रकृतिवादी ढंग है। परन्तु दूसरे वाला असली धर्म का आधार है। यीशु ने कहा, "... व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षा यही है" (आयत 12ख)। NIV में है "... यह व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का सार है।" यानी यह सुनहरी नियम मानवीय सम्बन्धों को पुराने नियम की शिक्षा को संक्षिप्त कर देता है।[19]

यह वचन पहले आई बातों का सारांश देने के लिए चर्चा के अन्त में आ गया है, पर यहां भी यह इसलिए है कि एक ऐसा नियम बताता है जो सम्बन्धों में पैदा होने वाली कई अन्य परिस्थितियों की बात करता है। कल्पना करें कि आपके पास सम्बन्धों की हर सम्भावित समस्या से निपटने के लिए एक पुस्तक है। यह कल्पना करने की कोशिश करें कि यह पुस्तक कैसी हो सकती है। फिर कल्पना करें कि आप किसी को प्रभावित कर रहे हैं और संकट खड़ा हो जाता है। यह पता लगाने के लिए कि इससे कैसे निपटा जाए, बड़ी सावधानी से पुस्तक के पन्नों में देखते हैं। एक घण्टा या थोड़ी देर बाद आपको वह उत्तर मिल जाता है जिसकी तलाश थी और तब तक दूसरा व्यक्ति चला जाता है। ऐसी पुस्तक देने के बजाय यीशु ने एक अर्थ में कहा कि "उस संकट या किसी भी संकट से निपटने का तरीका यह है। अपने आप से पूछो, 'यदि हालात उलट जाएं तो? मेरे साथ कैसा व्यवहार होगा?' फिर दूसरे व्यक्ति के साथ वैसा ही व्यवहार करें।"

कितना आसान पर कितना गम्भीर भी! क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि जीवन इसी आधार पर चले तो सब कुछ कैसा हो? यदि कारोबार इस तरीके से चले? यदि हर घर, हर स्कूल, हर देश, हर मण्डली, इस नियम को मान्यता दे?

मैं यहां यह कहने के लिए रुकना चाहता हूं कि प्रभु हम से सहजबुद्धि का इस्तेमाल करने की अपेक्षा करता है। मत्ती 7:12 यह मान लेता है कि जब हम अपने आपको दूसरे की जगह रखते हैं तो हम *इतने अच्छे* होंगे कि कुछ बुरा नहीं होने देना चाहेंगे और *इतने समझदार* होंगे कि कोई मूर्खता की बात नहीं करना चाहेंगे।[20] वरना शराबी व्यक्ति तर्क दे सकता है, "जो मुझे चाहिए वह यह है कि लोग मुझे शराब दें, सो मैं दूसरों के साथ वैसा ही करूंगा जैसा मैं चाहता हूं कि वे मेरे साथ करें–और गली में शराब की बोतलें बांटता फिरे।" व्यक्तिगत उदाहरण इस्तेमाल करने के लिए मैं तर्क दे सकता हूं, "मुझे कलेजी और प्याज खाना पसन्द है,[21] सो अगली बार जब मैं खाना बनाऊंगा तो मैं अपनी पत्नी के लिए कलेजी और प्याज ही बनाऊंगा:–इस तथ्य के बावजूद कि उसे कलेजी और प्याज से नफ़रत है।"

परन्तु मुझे लगता है कि हम में से अधिकतर लोग इस सुनहरी नियम को जिसकी हम बात

कर रहे है समझते हैं। यह वचन सामान्य नियमों की बात करता है जो सब लोगों पर लागू होता है। हम सब चाहते हैं कि हमारे साथ करुणामय व्यवहार हो सो हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। हम सब को प्रशंसा किया जाना पसन्द है सो हमें भी दूसरों की तारीफ करनी चाहिए। हम सभी को अच्छा लगता है कि दूसरे लोग हमारी बात का विश्वास करें यानी जो हम करते हैं उसको समझें, तो हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही करना चाहिए। यह सूची बढ़ती जा सकती है। हम चाहते हैं कि लोग हमें समझने की कोशिश करें, दया के चोगे से हमारी भूल चूक पर पर्दा दें तो हमें भी ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा हम उनसे चाहते हैं।

क्या यह अद्‌भुत नहीं होगा यदि हम एक ऐसे संसार में रहे जो हर किसी के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसा उसे पसन्द है ? क्या यह अद्‌भुत नहीं होगा *हम* हर किसी से ऐसा व्यवहार करें जैसा उसे पसन्द हो।

सारांश

मैंने पड़ा है कि महात्मा गांधी[22] आरम्भ में मसीहियत से, विशेषकर सुनहरी नियम सहित, पहाड़ी उपदेश की महान शिक्षाओं से प्रभावित हुए थे। जब उन से पूछा गया कि वह मसीही क्यों नहीं बने, तो दुख के साथ दिया गया उनका उत्तर था कि उन्होंने किसी मसीही को उन नियमों अनुसार *रहते* नहीं देखा। क्या मेरा जीवन उन नियमों के अनुसार है जिनका मैंने अध्ययन किया है? क्या आपका है?

मत्ती 7:1–12 के बाद प्रसिद्ध शब्द मिलते हैं:

> सकेत फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकेत है वह फाटक जो और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोडे हैं जो उसे पाते हैं (आयतें 13, 14)।

क्या यह सुझाव देना उचित होगा कि फाटक इतना तंग है कि इसमें केवल प्रवेश ही की अनुमति होगी ...

- उनके लिए जो दोष लगाने वाले नहीं हैं?
- उनके लिए जिनकी पहली चिन्ता अपने ही जीवनों में आवश्यक परिवर्तन लाने की है?
- उनके लिए जिनके दूसरों की सहायता करने के प्रयास दीनता और संवेदनशीलता से जाने जाते हैं?
- उनके लिए जो समझते हैं कि हर व्यक्ति अलग है और उन्होंने कठिनाई के साथ निपटना सीख लिया है?
- उनके लिए जिन्होंने परमेश्वर पन निर्भर रहने की ठान ली है?
- उनके लिए जो सुनहरी नियम के अनुसार जीते हैं?

हां मैं जानता हूं कि मत्ती 7:13, 14 मानवीय सम्बन्ध से कहीं अधिक बातों पर लागू होना

चाहिए, पर निश्चत रूप में यह वचन इसको शामिल करता है। दूसरों के साथ मिलकर रहना सीखना कितना आवश्यक है। क्या आप दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करने में नाकाम रहे हैं जैसा आपको करना चाहिए? मैं भी रहा हूं। यह समझ पाना कि परमेश्वर अपनी दयालुता के द्वारा हमें हमारी कमियां क्षमा कर देगा यदि हम मन फिराकर भविष्य में बेहतर करने की ठान लें, अद्‌भुत नहीं है?[23] हमारे पाठ का आरम्भ इस विचार के साथ हुआ था कि हमें *पहले* अपने ही जीवनों में आवश्यक बदलावों की चिन्ता होनी आवश्यक है। अपनी जांच करने का समय है। यदि आपका जीवन महत्वपूर्ण बदलावों की पुकार कर हरा है और यदि हम आपकी कोई सेवा कर सकते हैं तो कृपया हमें बताएं।

टिप्पणियां

[1]KJV में ''mote'' है जो ''बहुत छोटे कण'' के अर्थ वाला एक मध्यकालीन अंग्रेज़ी शब्द है (*दि अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण [2006], एस. वी. ''mote'')। [2]कइयों का मत है कि यह किसी घर को सहारा देने वाली लकड़ी या छत को स्थिर रखने के लिए सहायक शहतीर का भाग था। जो भी हो यह लकड़ी का एक *बड़ा* टुकड़ा था। [3]आंख में लट्ठा पड़े व्यक्ति के आंख में तिनका पड़े व्यक्ति की सहायता की पेशकश अंदाज़न मेरे किसी को बाल उगाने में सहायता की पेशकश जैसी है। (मैं ''माथे का चंदुआ'' हूं [लैव्यव्यवस्था 13:41; KJV]।) [4]वह उसे मार डालने को तैयार था। [5]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 59. [6]बर्टेंड रस्सल, ''ब्रेन्स ट्रस्ट,'' बीबीसी रेडियो ब्रॉडकास्ट, 26 अप्रैल 1948 (www.stoneforest.org/critical.html.; 6 मई 2008 को इन्टरनेट पर देखा गया)। [7]मेरे सुनने वालों के लिए टेलीफोन का खम्भा जाना पहचाना, ''शतीर'' या ''लट्ठा'' है। अपने सुनने वालों में परिचित शब्द का इस्तेमाल करें। [8]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोजिशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 29. [9]यह प्रेम की उत्कृष्ठ परिभाषाओं में से एक में संकेत मिलता है: ''प्रेम प्रियजन का भला चाहता है। सच्चा प्रेम प्रेमी के जीवन में पाप की अनदेखी नहीं कर सकता, पाप जो उसके प्राण की हानि कर सकता है। मत्ती 18:15 भी देखें। [10]एक समानता मत्ती 5:23, 24 से बनाई जा सकती है, जहां यीशु ने कहा, '' *पहले,* अपने भाई से मेल मिलाप कर और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ा।'' मसीह की मंशा भेंट चढ़ाने से मना करने की नहीं थी बल्कि वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि भेंट चढ़ा ने से *पहले* क्या किया जाना आवश्यक है।

[11]कइयों ने सुझाव दिया है, ''पवित्र वस्तु'' के बजाय धर्मशास्त्र में ''बाली'' अनुवाद होना चाहिए; परन्तु धर्मशास्त्र जैसा है वैसे ही स्वीकार्य है और समझने योग्य है (राबर्ट एच. माउंस, मैथ्यू, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री [पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991], 65)। [12]सूअर को आमतौर पर अशुद्ध ही बुलाया जाता था (लैव्यव्यवस्था 11:7); कुत्ता अशुद्ध था क्योंकि इसके खुर्र फटे नहीं थे और यह पागुर नहीं करता (आयतें 3, 4)। [13]कई विद्वान मानते हैं कि मत्ती 7:6 विलोम समानान्तर का एक उदाहरण है, जिसमें ''पलटकर फाड़ डाले'' का संकेत पहला भाग (''कुत्तों'') है। [14]हमारे यहां हम वर्षों पुराने प्रसिद्ध ''रेज़र बैग'' की बात कर सकते हैं। संसार के अन्य भागों के प्रचारक जंगली सूअर, बड़े-बड़े मस्सों वाला सूअर या सूअर जैसे जानवर की बात कर सकते हैं। [15]परमेश्वर की प्रेरणा रहित एक आरम्भिक मसीही दस्तावेज़, डिबेक में मत्ती 7:6 का इस्तेमाल यह सिखाने के लिए किया जाता था कि प्रभु भोज कभी भी बपतिस्मा न पाए हुओं के लिए नहीं दिया गया था। [16]यह ये संकेत देने का कि ''मेरा तुम्हारे साथ आगे से कोई लेन देन नहीं होगा'' एक सांकेतिक ढंग था। [17]यीशु ने स्वयं सूअरों के आगे मोती डालने से परहेज किया। कई बार उसने फरीसियों को उत्तर नहीं दिया (मत्ती 15:2, 3; 21:23-27)। उसने हेरोदेस से बात नहीं की (लूका 23:9)। [18]मत्ती 25 अध्याय वाली ''बकरियां'' इस नियम के नकारात्मक अभिव्यक्ति के आधार पर उद्धार पाई हुई होती (आयतें 31, 32, 41, 42)। [19]एक अर्थ में कहीं ओर यीशु ने कहा

कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना दूसरों के साथ व्यवहार करने पर व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की बातों का सार है (देखें मत्ती 22:37–40)। सुनहरी नियम हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम रखने में व्यावहारिक नियमावली का इस्तेमाल करने के लिए देता है। [20]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एंड फिलिप वाई, पैंडलटन, *दि फोरफोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ दि फोर गॉस्पल* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशर्स कं., 1914), 265 से लिया गया।

[21]कलेजी (बछड़े की कलेजी हो या सूअर की कलेजी), अमेरिका में प्याज के साथ खाना बहुत ही आम डिश है। इस गन्द वाले मिश्रण को कई लोग तो बड़े आनन्द से खाते हैं और कइयों को यह अच्छा नहीं लगता। [22]महात्मा गांधी (1869–1948) भारत की अहिंसक राष्ट्रवादी लहर का नेता, बीसवीं शताब्दी के महान राष्ट्रीय नेताओं में से एक था। [23]भविष्य में बेहतर करने का निश्चय करना सच्चे मन फिराव का भाग है।